माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में अध्ययन

शिक्षा शास्त्र विषय में

पी–एच०डी०
उपाधि हेतु
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय, मेरठ
को प्रस्तुत
शोध कार्य की
रूपरेखा

UGC Approved
Section 2f & 12B

शोध पर्यवेक्षकः
डा. संजीव कुमार
प्रोफेसर, कॉलिज ऑफ एजुकेशन,
आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ (उ.प्र.)

शोधार्थी
नवीन त्यागी

वर्षः 2022

–: शोध केन्द्र :–
कॉलिज ऑफ एजुकेशन,
आई0आई0एम0टी0 विश्वविद्यालय, मेरठ

1. प्रस्तावना

किसी भी देश की प्रगति में उसके सभी संसाधनों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। सभी संसाधनों में से मानव संसाधन का योगदान सबसे अधिक माना जाता है। मानव की सर्वांगीण प्रगति हेतु शिक्षा अत्याधिक जरूरी तत्व है। शिक्षा के बिना मानव की प्रगति असंभव है इसे चरितार्थ करने के लिए प्रबुद्ध, सक्षम व् निपुण अध्यापकों का योगदान अपेक्षित होता है। अध्यापकों को अग्रसर करने में राष्ट्र की भूमिका अहम् होती है राष्ट्र ऐसी योजनाओं और गतिविधियों को बनाने के लिए निरंतर अग्रसर रहते है जो अध्यापकों को नवीन सृजन और नयी सोच के लिए प्रेरित करें शिक्षक नए राष्ट्र का निर्माता होता है इसलिए अध्यापकों में गुणवत्ता और दक्षता का होना अनिवार्य है अध्यापकों की गुणवत्ता, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण दक्षता तथा उसके वृत्तिक उत्तरदायित्व की गुणवत्ता पर निर्भर करती है शिक्षक होने के नाते उनकी यह जिम्मेदारी बनती है कि अपने शिक्षार्थियों को इतना निपुण एवं सक्षम बनाये कि वे अपने राष्ट्र को विकासशील देश से विकसित देश बना सके कक्षा में शिक्षार्थियों को बनाये रखने के लिए, वास्तविक शिक्षा को संभव बनाने के लिए, उपलब्धि का स्तर बढ़ाने के लिए, शिक्षार्थियों की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए और शिक्षा के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए शिक्षक को न केवल प्रतिबद्ध और निष्ठावान होने चाहिए बल्कि समर्थ और प्रभावी भी होना आवश्यक है जिस प्रकार दीपक स्वयं प्रकाशमान होकर दूसरों को रोशनी देता है और अपने स्पर्श मात्र से अन्य हजारों दीपक को जला देता है, उसी प्रकार शिक्षक भी ज्ञान की ज्योति को शिक्षार्थियों तक पहुंचाते है और उनके जीवन के अंधकार को दूर करने का प्रयास करते है।

मानव के रूप में शिक्षक और व्यवसाय के रूप में शिक्षक कार्य संसार में

सर्वोच्च माने जाते हैं। कोठारी आयोग ने कहा है– "भारत की किस्मत का सृजन भारत की पाठशालाओं में हो रहा है।" अतः शिक्षक की भूमिका संपूर्ण विश्व में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक, ज्ञानदाता एवं आने वाले समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण होती है। आधुनिक काल में शिक्षण में सुधार की जरूरत पर जोर दिया जा रहा है इसलिए उन अध्यापकों की जरूरत है जो पढ़ाने के कार्यों में निपुण हो, जिनका पढ़ना प्रभावशाली हो और जो शिक्षण के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रवृति रखते हों।

रायनस ने अध्यापकों की विशेषताओं का विवेचन करते हुए कहा था वह शिक्षक जो विद्यार्थियों में विश्व जीवन का उपयुक्त अवबोध विकसित करने में कुशल है, जो अपनी अंतर्दृष्टि का माध्यम से विद्यार्थियों की बौद्धिक पिपासा जागृत करने में सक्षम है और जिनमे दूसरों के लिए धैर्य, सहृदयता और सच्ची अनुभूति है, वे एक प्रबुद्ध और प्रगतिशील समाज के निर्माण में समर्थ है इसके विपरीत निम्न कोटि के शिक्षण से अज्ञान, भ्रम तथा बौद्धिक और सांस्कृतिक जड़ता की ही उत्पत्ति हो सकती है।

शिक्षण–अधिगम उपक्रम के उद्देश्यों की दृष्टिगत अध्यापक को उन समस्त अनुदेशनात्मक तकनीकों को उपयोग करना चाहिए जिनसे बच्चों को अधिगम की प्रेरणा मिल सके। पाठशाला एक ऐसा स्थान है जहाँ पृथक–पृथक संस्कृतियों, योग्यताओं और क्षमताओं युक्त विद्यार्थी होते है और इन समस्त कारकों को सम्मुख रख कर पढ़ाने के लिए एक निपुण, कुशल और प्रभावी शिक्षक की आवश्यकता होती है।

वर्तमान समय में सिखाने–सीखने की प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका को अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जा रहा है यहाँ तक कि भारत की एन.ई.पी. 2020 में शिक्षक को अभिभावक से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं जिम्मेदार मानकर उसकी

जिम्मेदारियों में अत्यधिक बढ़ोत्तरी की गई है। अध्यापक की शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षण दक्षता को बड़े लेवल पर सषक्त बनाना है ताकि सिखाने–सीखने की प्रक्रिया की गुणवत्ता को और ज़्यादा अच्छा बनाया जा सके।

अधिकतम व्यक्ति शिक्षण प्रभावशीलता और शिक्षण–दक्षता को एक जैसा मानते हैं। इनके असर का मूल्यांकन इस तथ्य से किया जाता है कि अधिगमकर्ताओं की सीखने की शैली कैसी रही है। गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने के लिए अध्यापकों में शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता जैसे गुणों का होना अनिवार्य है। अतः शिक्षक की भूमिका सम्पूर्ण विश्व में एक महत्वपूर्ण मार्गदर्शक, ज्ञानदाता एवं आने वाले समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण होती है।

देश का समुचित विकास तभी सम्भव है जब सिखाने की प्रक्रिया सषक्त होगी। आज का विद्यार्थी ही कल का नागरिक होता है। यदि विद्यार्थियों में आत्म–निर्भरता, नैतिकता और सहयोग की भावना भली–भांति रूप से वितरित की जायेगी तो शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् जब सामाजिक जीवन में प्रवेश करेंगे तो वे स्वयं एक आदर्श नागरिक सिद्ध होंगे। विद्यार्थियों को एक आदर्श नागरिक बनाने का दायित्व अच्छे अध्यापकों पर ही है।

किसी राष्ट्र का स्तर उसकी जनता से आँका जाता है। जनता का स्तर वहां के ऐजूकेशन सिस्टम से आँका जाता है तथा ऐजूकेशन सिस्टम का स्तर उसके अध्यापकों के स्तर से आँका जाता है। शिक्षा की कोई प्रणाली उसके अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकती। किसी भी पाठशाला का विकास अथवा उसकी सफलता प्रायः अध्यापकों के ज्ञान, व्यक्तित्व और शिक्षण कौशलों पर आधारित होती है। ऐसा माना जाता है कि पाठशाला में जैसे शिक्षक होते है वैसे ही उनकी छाप विद्यार्थियों पर पड़ती है। एक अच्छा शिक्षक कक्षा में प्रभावशाली वातावरण बनाने में

सफल होता है तो दूसरी ओर पाठशाला के बाहर भी इसका प्रभाव दिखाई पड़ता है।

भारत में अध्यापकों के प्रशिक्षण से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के सेवारत् एवं सेवा पूर्व शिक्षण–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किये जाते है, जिनके माध्यम से गुणवत्तापरक् अध्यापकों का निर्माण सम्भव हो पाता है। भारत में विषय में अध्यापकों के प्रशिक्षण से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों का निर्माण एवं नियमन राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद करती है। इस हेतु एन.सी.टी.ई. द्वारा बी०एड०–एक वर्ष, बी०एड०–दो वर्ष, बी०ई–एल०एड०–चार वर्ष, डी०ई–एल०एड०–दो वर्ष एवं डी.एड. पाठ्यक्रम चलाये जाते है। जो कि शिक्षक–शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए होते हैं। इन पाठ्यक्रमों में गुणात्मक सुधार से सम्बन्धित परिवर्तन समय–समय पर किये जाने सम्भव होते हैं, जिनके फलस्वरूप शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाया जाता है।

1.1 शिक्षण दक्षता का अर्थ एवं परिभाषा

परम्परागत तथा अपरम्परागत क्षेत्र में यह अवधारणा बहुत ही ज्वलंत बन गयी है कि कोई भी शैक्षणिक कार्यक्रम की सफलता तभी सुनिष्चित हो सकती है जबकि स्कूल की कक्षाओं में अध्यापकों द्वारा प्रभावी ढंग से पढ़ाने का टास्क पूरा किया जाये।

शिक्षण दक्षता में संज्ञान, कौशल एवं मूल्य समाहित होते है जो प्रत्येक शिक्षक–प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के सफलतापूर्वक संचालन के द्वारा ही सम्भव हैं। शिक्षण दक्षता वह क्रियाशील योग्यता है जो एक शिक्षक अपनी शिक्षण गतिविधियों द्वारा दर्शाता है यह किसी भी व्यावहारिक परिस्थिति में मुख्य सिद्धांतो और शिक्षण की तकनीकों को प्रयोग करने की योग्यता है यह ज्ञान एवं उसकी प्रक्रियाओं और विधियों और सम्प्रेषण के साधनो को उपयुक्त करने का एक रोचक तरीका है दक्षता से अभिप्राय प्रोफेशनल योग्यता, जिसमें अर्जित अधिगम एवं हायर लेवल की अवधारणा प्रस्तुत करने की

योग्यता समाहित है। दक्षता का अर्थ है छात्रों को कार्यकुशलता और संरक्षण का सम्यक् ज्ञान देना। दक्षता का प्रशिक्षण उद्देश्य भी यही है कि प्रशिक्षित अध्यापक क्रियाशील योग्यताओं या गुणों के द्वारा विकास कर सके। शिक्षक शिक्षा सामान्यतः एक प्रोफेशनल प्रोग्राम सिस्टम है जो प्रमाणीकरण की ओर ले जाता है। और इसमें शिक्षा, मनोविज्ञान, दर्शन एवं कक्षा प्रबन्ध हैं तथा इसके कार्य कलाप, टीचिंग मैथड, टीचिंग अभ्यास आदि शिक्षण दक्षता में सम्मिलित है।

दक्षताएं वो कौशल और ज्ञान होते है जो शिक्षक को सफल होने में योग्य बनाता है। विद्यार्थियों में अधिगम को बढ़ाने के लिए, अध्यापकों को प्रतिदिन ऐसे आलोचनात्मक निर्णय भी लेने पड़ते है जिनके द्वारा एक शिक्षक अपनी दक्षता को और निखार सकता है। अन्य ऐसे बहुत से व्यवसाय हैं जिनमे शिक्षण की ही भांति व्यावसायिक निर्णय लेने की सक्षमता और तर्क आधारित दक्षताओं का एकीकरण समाहित हैं।

बैले के अनुसार (2006) दक्षता से तात्पर्य ऐसे कथनों के बारे में है जो यह बताते है कि शिक्षक के लिए क्या जानने और क्या करने के योग्य है। शिक्षण दक्षता के विभिन्न आयाम है जैसे विषयवस्तु पर आधिपत्य, विद्यार्थियों को प्रेरित करना, नियोजन, प्रस्तुतीकरण, समापन, कौशलों का मूल्यांकन, कक्षीय प्रबंधन कौशल। प्रत्येक शिक्षक में उनके अनुभवों, योग्यताओं और शैक्षिक पृष्ठ शिक्षण भूमि के आधार पर विभिन्न प्रकार के कौशल और दक्षताएं होती है।[1]

किसी भी प्रकार की शिक्षा की सफलता, अध्यापकों के गुणवत्ता सुधार और उनके व्यावसायिक विकास से होती है। शिक्षक के विकास के लिए निरंतर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है जो शिक्षण कार्यकाल तक चलता है।

1.2 शिक्षण प्रभावशीलता

शिक्षक छात्रों को किस प्रकार अपने शिक्षण कार्य के द्वारा संतुष्ट करता है, यह उसकी पढ़ाने की प्रभावशीलता के रूप में जानी जाती है। अधिगमकर्ताओं पर पढ़ाने से होने वाले प्रभाव को ही शिक्षण प्रभावशीलता कहा जाता है। प्रत्येक शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का तात्पर्य उसके पढ़ाने से छात्रों की सफलता का स्तर, छात्रों का संतुष्टि स्तर, विशिष्ट एवं शैक्षणिक लक्ष्यों के प्राप्त करने के बिन्दु से है। अतएव शिक्षण प्रभावशीलता का प्रत्यक्ष सम्बन्ध सिखाने की शिक्षण प्रदान करने की क्षमता से है, जिसे अध्यापक अपने व्यावसायिक कौशलों तथा अर्जित विषय वस्तु के द्वारा छात्रों को कक्षा में पढ़ाते हुए अर्जित करता है।

शिक्षण प्रभावशीलता से तात्पर्य षिक्षणतंत्र में उसकी क्रियाओं की सफलता के अनुपात से है तथा शिक्षक की उस क्रियाविधि से है, जिससे सीखने वालों का संतुष्टि बिन्दु तथा अधिगमकर्ताओं की प्राप्ति का स्तर निर्धारित होता है।

शिक्षण प्रभावशीलता को समझाते हुए कहा जा सकता है कि शिक्षण प्रभावशीलता का अभिप्राय छात्रों के विकास से है। विभिन्न लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अध्यापक द्वारा अपने ज्ञान, कौशल, अभिवृतियों व प्रोत्साहन का जो प्रदर्शन किया जाता है, वह शिक्षण प्रभावशीलता है शिक्षण प्रभावशीलता का आंकलन शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न कौशलों के उपयुक्त प्रदर्शन से लगाया जाता है शिक्षण प्रभावशीलता को ज्ञात करने की विभिन्न विधियां प्रयोग में लायी जाती है जैसे अध्यापकों द्वारा स्वयं मूल्यांकन, सहयोगी द्वारा मूल्यांकन, प्रशासकों द्वारा मूल्यांकन, छात्रों द्वारा मूल्यांकन आदि।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

सहाणे एवं कौर (2011)[2] ने टीचर इफैक्टिवनेस इन रिलेशन टू सेल्फ कन्सेप्ट ऑफ एलीमेन्ट्री स्कूल टीचर्स पर अनुसंधान किया। अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक

विद्यालय के महिला अध्यापकों एवं पुरुष अध्यापकों के स्व–अवधारण और शिक्षण–प्रभावशीलता के मध्य सार्थक सम्बन्ध को देखना था। प्रदत्त प्राप्त करने हेतु पंजाब के प्राइमरी स्कूल के 700 अध्यापकों का यादृच्छिक रूप से चयन किया। अध्यापकों द्वारा प्रश्नावली भरवा कर सर्वे विधि के माध्यम से प्रदत्त एकत्र किये गये। शोध में परिणामतः देखा कि शिक्षिकाओं एवं अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता और स्व–अवधारणा के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया।

चौहान, रीति और गुप्ता, प्रतिभा (2014)[3] ''गाजियाबाद जिले के सेकेण्डरी स्कूल में अध्यापकों के मध्य शिक्षण क्षमता का अध्ययन में परिणाम रहा कि सेकेण्डरी स्कूलों में शिक्षणरत् अध्यापकों की अपेक्षा शिक्षिकाओं की योग्यता ज्यादा है। यह पाया गया कि शहरी अध्यापकों की क्षमता अनुभवी अध्यापकों की ग्रामीण क्षमता से अधिक है, अनुभवहीन अध्यापकों की तुलना में अधिक है, लेकिन उनकी क्षमता कम सकारात्मक पाई गई है।

प्रीति नायर (2017)[4] ''ए स्टडी ऑन आइडेंटिफाइड टीचिंग कॉम्पिटिशन एंड विशेष के साथ शिक्षण दक्षताओं को प्रभावित करने वाले कारक गुजरात में एमबीए संस्थानों के संदर्भ में अध्ययन किया। यह शोध विभिन्न कारकों के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास करता है। व्यक्तिगत, संगठनात्मक और नौकरी से संबंधित, जैसे शिक्षण दक्षताओं को प्रभावित करना। शिक्षण दक्षताओं और उन्हें प्रभावित करने वाले कारकों की ओर चर साहित्य की समीक्षा का गहन अध्ययन और विश्लेषण 47 शिक्षण दक्षताओं की ओर ले गया। ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण जैसे कारकों और शिक्षण को प्रभावित करने वाले 25 कारक दक्षताओंका चयन किया गया । चयनित एमबीए संस्थानों में पढ़ाने वाले 358 अध्यापकों की शिक्षण दक्षता और प्रभावित करने वाले कारकों दोनों के बारे में लिया गया था। उन्होंने अध्यापकों के शिक्षण के लिए

आवश्यक शिक्षण दक्षताओं के रूप में 33 चरों और 9 चर को प्रभावित करने वाले कारकों के रूप की पहचान की। यह भी पाया गया कि दोनों पर जनसांख्यिकीय चर का प्रभाव है। इसमें विश्लेषण एसपीएसएस जैसे सांख्यिकीय तरीकों और विभिन्न परीक्षणों जैसे वेटेड मीन वैल्यू, फैक्टर एनालिसिस, मैन व्हिटनी यू टेस्ट और क्रुस्ल वालिस टेस्टका उपयोग करके अध्ययन किया गया है।

इस प्रकार निष्कर्ष आवश्यक शिक्षण दक्षताओं और कारकों को इंगित करते हैं जो उन्हें प्रभावित करते हैं।

राणा, निष्ठा (2019)[5] इस शोध कार्य का उद्देश्य सेकेण्डरी विद्यालय के अध्यापकों की शिक्षण क्षमता में अंतर की जांच उनके लिंग, स्कूल के स्थान, स्कूल के प्रकार, योग्यता, विषय पृष्ठभूमि और षिक्षण अनुभव के संबंध में था। जम्मू तहसील (भारत) के 10 सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् 100 अध्यापकों का एक नमूना तैयार करने के लिए रैंडम सैंपलिंग तकनीक लागू की गई। पासी और ललिता द्वारा एक मानकीकृत उपकरण अर्थात् सामान्य शिक्षण योग्यता स्केल (GTCS, 1994) का उपयोग डेटा संग्रह के लिए किया गया है। निष्कर्षों में अध्यापक और अध्यापिकाओं की शिक्षण दक्षताओं में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया। हालांकि, सामान्य शिक्षण योग्यता स्केल के सभी शिक्षण कौशल पर उनके स्कूल, स्कूल के प्रकार, विषय पृष्ठभूमि, योग्यता और शिक्षण अनुभव के स्थान के संबंध में सेकेण्डरी स्कूलों के अध्यापकों की शिक्षण दक्षताओं में महत्वपूर्ण अंतर पाए गए। इसके अलावा, यह देखा गया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पढ़ाने वाले अध्यापकों में शहरी क्षेत्रों में पढ़ाने वाले अध्यापकों की तुलना में बेहतर शिक्षण क्षमता होती है, निजी सेकेण्डरी स्कूलों में काम करने वाले अध्यापक सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की अपेक्षा अधिक सक्षम होते हैं, स्नातकोत्तर अध्यापकों के पास स्नातक अध्यापकों की तुलना में बेहतर शिक्षण योग्यताएँ होती हैं। कला अध्यापकों की तुलना में विज्ञान अध्यापकों के पास बेहतर

नियोजन और प्रस्तुति कौशल है, कम अनुभवी अध्यापकों में भी अधिक अनुभवी अध्यापकों की तुलना में बेहतर शिक्षण क्षमता पाई गई है। इस प्रकार, अध्यापकों की शिक्षण दक्षताओं को चयनित चर के संबंध में काफी भिन्नता है।

3. अध्ययन का औचित्य

शिक्षा की प्रमुखता शिक्षक की भूमिका पर निर्भर करती है यदि शिक्षक समाज और समय के अनुरूप कार्य करता है तभी वह समाज के उचित अनुकूलन में सहयोग कर पाता है। आज के समय में शिक्षा में संख्यात्मक प्रगति देखि जा सकती है किन्तु गुणात्मक रूप से अभी इसमें सुधार की आवश्यकता है। गुणात्मक स्तर पर शैक्षिक क्रांति की शुरुआत हो चुकी है जहाँ शिक्षण अधिगम और प्रशिक्षण के क्षेत्रों में परम्परावादी प्रक्रियाओं से निकल कर शिक्षा अब नवीन विधियों की ओर अग्रसर है। पहले जहाँ केवल मानसिक विकास और ज्ञानार्जन ही मुख्य था, वहीं पर आज सर्वांगीण विकास पर बल दिया जाता है। पहले शिक्षक एक प्रधान या निर्देशक के रूप में कार्य करता था परन्तु अब मित्र, दार्शनिक, पथ प्रदर्शक के रूप में अपना योगदान दे रहा है। बालक अब निष्क्रिय श्रोता नही बल्कि एक क्रियाशील ईकाई है। शिक्षक की कर्मस्थली विद्यालय और उसके कार्य का प्रारम्भ कक्षा–कक्ष से होता है। समय चुनौतियाँ देता है और उन्हे स्वीकार करने वाला शिक्षक ही आज कक्षा में खड़ा रह पाता है। परम्परावादी सोच और पुरानी शिक्षण प्रणालियों में उलझा शिक्षक कभी भी नवीन विचारों और प्रणालियों को नहीं अपना पाता और न ही विद्यार्थियों में इस प्रकार की सोच को विकसित कर सकता है। आज के युग की आवश्यकता है कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों में इस प्रकार के गुण विकसित करें जो आधुनिक गतिविधियों को ध्यान में रखकर निर्मित किये गए हो और इसी नवीनता के द्वारा वह उसे गति प्रदान कर सकें। इसी बात का समर्थन करते हुए माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी अपने प्रतिवेदन में लिखा हैः ″अपेक्षित शिक्षा के पुनर्निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भाग अध्यापक

है, उसके व्यक्तिगत गुण एवं शैक्षणिक योग्यताएँ उसका व्यावसायिक प्रशिक्षण और उसकी स्थिति वह जो विद्यालय तथा समाज में ग्रहण करता है। स्कूल की प्रतिष्ठा तथा समाज के व्यक्तियों के जीवन पर उसका प्रभाव निःसंदेह रूप से उन अध्यापकों पर निर्भर है जो कि उस स्कूल में कार्यरत् हैं।"

शिक्षक की गुणवता की दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा आयोग में कहा है कि भारत सरकार ने गुणवत्ता में सुधार लाने के लिये योजनाएँ चलाई। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने कहा था कि अध्यापकों की सक्षमता शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला एक कारण होती है।[6]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 – की प्रस्तावना में यह स्पष्ट रूप से उल्लिखित था कि शिक्षा की गुणवत्ता और राष्ट्र के विकास में योगदान करने वाली सभी कारकों में निःसन्देह शिक्षक ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। सभी शैक्षिक प्रयासों की सफलता का भार अन्ततः उसी के निजी गुणों उसकी व्यावसायिक क्षमताओं पर होता है।[7]

सक्षम और कार्यकुशल अध्यापकों के अभाव में सभी अच्छी पाठ्यचर्यायें, उपकरण व्यवहारतः व्यर्थ होकर रह जाते हैं। अध्यापक की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी शिक्षार्थी की सहायता करना, उसकी वैयक्तिक शैली में नई योग्यताओं का समावेशित करना तथा हमेशा विकास का समग्र दृष्टिकोण अपनाने में सहायता करना है। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक भी स्वयं सर्वाधिक सक्षमता और कार्यकुशलता पाने का प्रयास करता रहे। शिक्षक का प्रभावी अध्यापन छात्रों के अधिगम को प्रभावित करता है जो कि छात्रों के व्यवहार से दृष्टिगोचर होता है तथा व्यवहार छात्रों के व्यक्तित्व का सूचक है।

शिक्षण–प्रशिक्षण द्वारा शिक्षक अपनी शिक्षण दक्षता में वृद्धि कर अपनी क्षमताओं का सदुपयोग करता है। अध्यापन व्यवसाय के लिए शिक्षण दक्षता के साथ–साथ

उच्च गुणों से युक्त संवेदनशील, जागरूक, दूरदृष्टि, शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ, नैतिक एवं चारित्रिक गुणों वाले आदर्श सामाजिक प्रतिमानों से युक्त व्यक्तियों कि आवश्यकता होती है। इसलिए प्रशिक्षण कला के लिए ऐसे ही व्यक्तियों का चयन किया जाता है जो बालकों की रूचि, रुझान, योग्यता एवं वैयक्तिक भिन्नता कि जानकारी रखते है। अतः शिक्षण दक्षता का ज्ञान एवं उनमे निपुणता प्रशिक्षणार्थी को प्रशिक्षण के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

माध्यमिक शिक्षा बालक की औपचारिक शिक्षा का संवेदनषील स्तर है। भारत में यह कक्षा 9वीं से कक्षा 12वीं तक की चार वर्षीय शिक्षा है। सामान्यतः बालक 13—14 वर्ष की आयु में माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश लेता है और यह लगभग उसकी 18 वर्ष की आयु तक चलती है। प्रथम दो वर्ष की शिक्षा को माध्यमिक शिक्षा तथा अगले दो वर्षों की शिक्षा को उच्चतर माध्यमिक शिक्षा कहना प्रमाणिक है। यह शिक्षा का संवेदनशील स्तर है जो मनुष्य को किशोरावस्था में दिया जाता है। यह व्यक्ति को समाज के साथ बेहतर संतुलन स्थापित करने में सहायता प्रदान करती है।

प्रभावकारिता से शिक्षक कौशल, ज्ञान और कुशलता जुडी होती है। अतएव समस्त पक्षों को ध्यान में रखते हुए ही शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध समस्या को शोध के लिए चयनित किया है। शोधकर्ता ने साथ ही यह भी अनुभव किया कि पूर्व में इस प्रकार का कोई भी शोध नहीं हुआ है जिसमे शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में उत्तीर्ण अध्यापकों का अध्ययन किया गया हो। अतएव सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् अध्यापकों की शिाक्षण दक्षता और षिक्षण प्रभावशीलता का शिक्षण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण अध्यापकों के सन्दर्भ में शोध हेतु प्रस्तुत शोध समस्या को लिया गया।

4. शोध समस्या कथन

सेकेण्डरी स्कूलों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण

प्रभावशीलता का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के सन्दर्भ में अध्ययन।

5. शोध उद्देश्य

1. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी अध्यापकों की अध्यापन दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी ग्रामीण अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी शहरी अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
7. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी महिला अध्यापकों की शिक्षण दक्षता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावषीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

9. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी ग्रामीण अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

10. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी शहरी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

11. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

12. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

13. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

14. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

6. शोध परिकल्पनाएं

शोधकर्ता ने शोधकार्य में निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं की संरचना की है–

1. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी अध्यापकों की अध्यापन दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय

योग्यता धारी ग्रामीण अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी शहरी अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी महिला अध्यापकों की शिक्षण दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
8. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
9. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी ग्रामीण अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
10. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी शहरी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
11. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
12. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी पुरूष एवं महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
13. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय

योग्यता धारी पुरूष अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

14. सेकेण्डरी स्कूलों में अध्यापनरत् बी०एड० एक वर्षीय और बी०एड० द्विवर्षीय योग्यता धारी महिला अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

7. शोध प्रारूप एवं शोध विधि

अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान प्रारूप एवं सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा।

8. शोध जनसंख्या एवं शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में जनसँख्या के रूप में उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल (बुलंदशहर, हापुड़, नोएडा, मेरठ, गाजियाबाद) के सरकारी एवं उत्तर प्रदेश शासन द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त सेकेण्डरी स्कूलों में कार्यरत समस्त अध्यापकों को सम्मिलित किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल के ग्रामीण एवं शहरी सेकेण्डरी स्कूलों से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा 400 माध्यमिक अध्यापकों को न्यादर्श हेतु चयनित किया जायेगा। जिसमें 200 अध्यापक तथा 200 अध्यापिकाओं का चयन ग्रामीण व शहरी क्षेत्र से समान रूप से किया जायेगा।

9. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों की शिक्षण दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता को मापने के लिए शोधकर्ता द्वारा मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

1. डॉ बी.के. पासी एवं डॉ एम.एस. ललिता द्वारा निर्मित मानकीकृत उपकरण का

प्रयोग शिक्षण दक्षता के मापन हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जायेगा।

2. शिक्षण–प्रभावशीलता के मापन हेतु डॉ0 प्रमोद कुमार और डॉ0 डी0एन0 मूथा द्वारा निर्मित मानकीकृत शिक्षण–प्रभावशीलता मापनी परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

10. सांख्यिकीय प्रविधियाँ

अनुसन्धान के उद्देश्यों की सफलतम प्राप्ति हेतु मुख्य रूप से निम्नांकित सांख्यिकी का उपयोग शोधार्थी द्वारा किया जायेगा–

. मध्यमान, मानक विचलन, एवं 'टी' परीक्षण।

11. परिसीमाएं

प्रस्तुत शोधकार्य की परिसीमाएं निम्नलिखित हैं–

1. शोधकार्य का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के मेरठ मंडल के दो जनपदों (मेरठ, हापुड़) तक ही सीमित रहेगा।
2. शोधकार्य में न्यादर्श माध्यमिक स्तर पर कार्यरत कुल 400 अध्यापकों तक ही सीमित रहेगा।
3. शोधकार्य सेकेण्डरी स्कूलों में कार्यरत बी०एड० एक वर्षीय तथा बी०एड० द्विवर्षीय शिक्षण–प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों तक ही सीमित किया जायेगा।
4. शोधकार्य में केवल प्रमापीकृत शोध उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अंजली युलु, बी0एस0आर0 (1977)–अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि, शिक्षण अभिरूचि तथा शिक्षण अभिक्षमता का अध्ययन, आन्ध्र प्रदेश विश्वविद्यालय, पी–एच0डी0 एजूकेशन।

2. सहाणे एवं कौर (2011) –"शिक्षक विद्यालय के अध्यापकों की आत्म अवधारणा के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता". इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, एन इंटरडिसिप्लिनरी जर्नल. 2015. वाल्यूम 2, No.1

3. **चौहान, रीति और गुप्ता, प्रतिभा (2014)** –"गाजियाबाद जिले में माध्यमिक स्कूल स्तर में अध्यापकों के बीच शिक्षण प्रतियोगिता का अध्ययनश एशियाई जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड टेक्नोलॉजीवाल्यूम4 (1), Jan. 2014: 355-359

4. **प्रीति नायर (2017)** –"गुजरात में एमबीए संस्थानों के लिए विशेष संदर्भ के साथ शिक्षण दक्षताओं की पहचान करने वाले शिक्षण दक्षताओं और कारकों की पहचान पर एक अध्ययन''. थीसिस सुबेटेड टो गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी।

5. राणा, निष्ठा (2019)– "चयनित चर के संबंध में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की शिक्षण योग्यता". जर्नल ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन. वोल्यूम7, No. 1.

6. रिजवी (1975)– ''कार्यसंतुष्टि तथा शिक्षण अभिक्षमता के बीच सह–सम्बन्ध'' पी–एच0डी0 (शिक्षाशास्त्र) कानपुर युनिवर्सिटी कानपुर।

7. राठौड़ अनामिका (2014)– माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर सूचना एवं सम्प्रेक्षण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन. भारतीय शिक्षा

शोध पत्रिका, 33 जुलाई–दिसंबर 2014.